हिंदी साहित्य सभा 'मंथन' के उद्घघाटन व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दो दिवसीय व्याख्यान एवं वेबिनार का आयोजन

श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय), हिंदी विभाग, की हिंदी साहित्य सभा 'मंथन' के द्वारा दो दिवसीय व्याख्यान एवं राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन विभाग प्रभारी डॉ. दीपमाला के निर्देशन में किया गया। यह आयोजन हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 14 सितम्बर और 15 सितम्बर, 2020 को किया गया। प्रथम दिवस का मंच संचालन डॉ दीपमाला ने किया। व्याख्यान में, वक्ता के तौर पर डॉ. सविलता यादव और डॉ. भूपेंद्र कौर ने उपस्थित शिक्षकों एवं बच्चों का ज्ञानवर्धन किया। डॉ. सविलता यादव ने अपने विषय 'कोरोना काल में ऑनलाइन कक्षाओं' की ख़ूबियों व कमियों के बारें में विस्तार से समझाया। साथ ही, ऑनलाइन कक्षा सम्बन्धित कई समाधान भी सुझाएं।

डॉ. भूपेंद्र कौर ने अपने विषय 'हिंदी में रोज़गार के अवसर' से सम्बन्धित हर प्रकार की महत्त्वपूर्ण जानकारी बताई। उन्होंने, हिंदी में रोजगार पाने में के लिए उपलब्ध वेबसाइट, माध्यम व तरीकों की जानकारी दी।

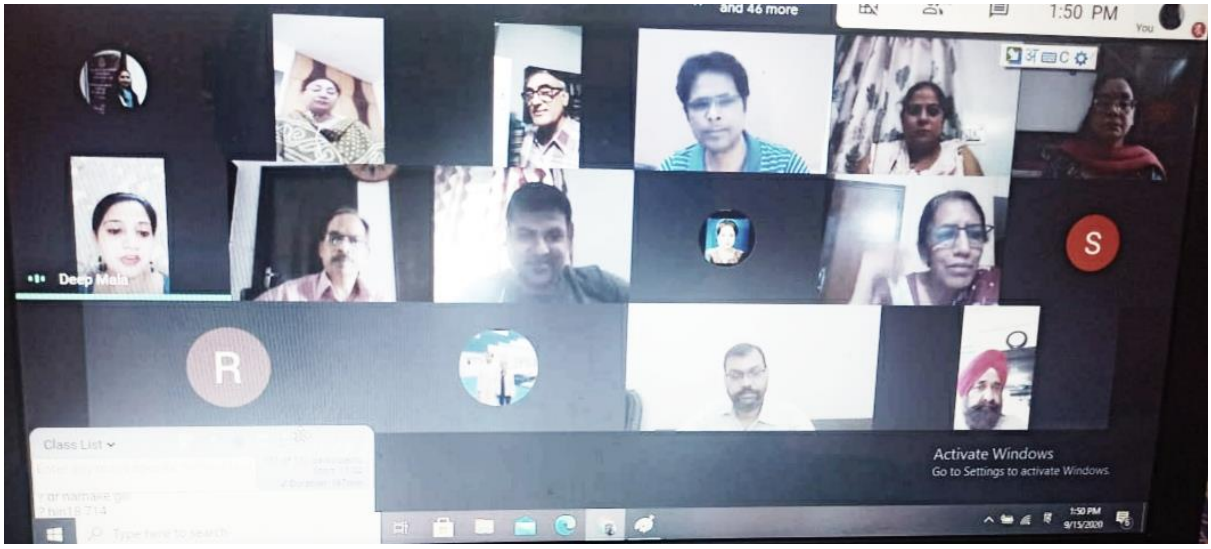

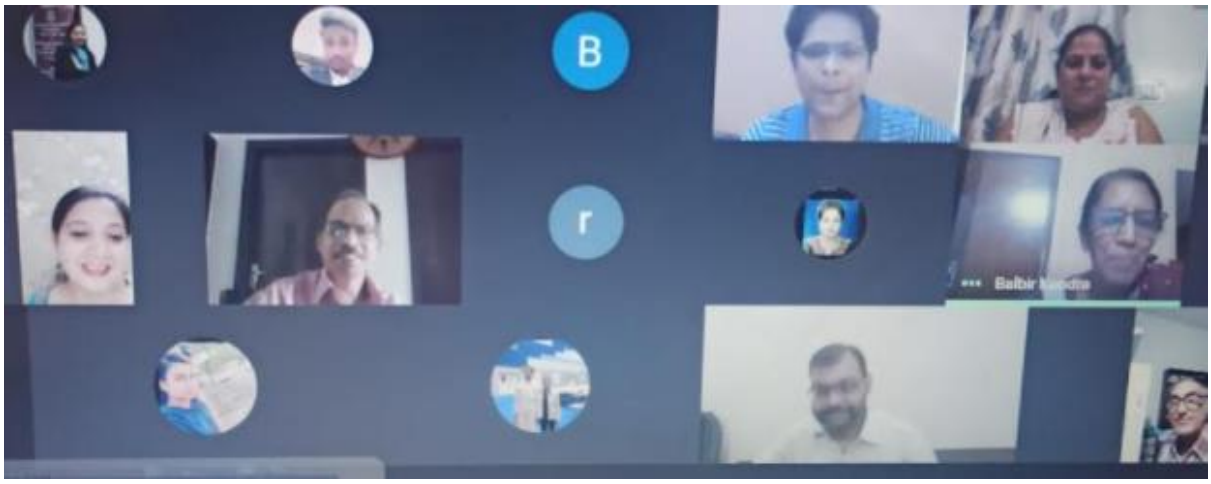

दूसरा दिन राष्ट्रीय वेबिनार का रहा, जिसका संचालन विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. रेनू दुग्गल ने किया। वेबिनार की शुरुआत खालसा कॉलेज के प्राचार्य 'डॉ गुरमोहिंदर सिंह' के स्वागत वक्तव्य द्वारा हुई। उन्होंने हिंदी विषय सम्बन्धित अनेक प्रकार की प्रमुख बातें श्रोताओं के साथ साझा की। उन्होंने कहा कि यदि हिंदी को शिखर पर पहुंचना है, तो उसका शुद्ध होना आवश्यक है। इसके लिए, हिंदी भाषियों को भी योग्य बनना होगा। इसके उपरांत वेबिनार के प्रमुख वक्ता 'डॉ रामनारायण पटेल' ने सभी श्रोताओ को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दी और 'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य और रोजगार की संभावनाएं' पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने हिंदी के इतिहास व उसके वैश्विक रूप की चर्चा की। उन्होंने

कहा कि 'हिंदी केवल हमारी मातृभाषा नहीं बल्कि हमारी पहचान है, इससे हमारी संस्कृति, अस्मिता व परम्पराएँ जुड़ी हुई है। हिंदी की अपनी विशिष्ट प्रकृति है, जो किसी अन्य भाषा मे नही है। हिंदी जन और राज्य के बीच की सम्पर्क भाषा है। हिंदी धार्मिक सम्प्रदायों और तमाम कवियों की भाषा है। यह तकनीकी, सूचना-प्रोद्यौगिकी, इंटरनेट- कम्प्यूटर, ज्ञान-विज्ञान आदि की भाषा है। साथ ही, बाज़ार-व्यापार की भी लोकप्रिय भाषा है। यह शिक्षित-अशिक्षित सबकी भाषा है और इसीलिए कोई भी हिंदी को बिना सकुचाये व आत्मीयता के साथ बोल लेता है।

वेबिनार के दूसरे प्रमुख वक्ता डॉ. अनुपम श्रीवास्तव ने विषय सम्बन्धित तमाम बातें बताई। उन्होंने 'हिंदी के लोकल से ग्लोबल का सफर और संघर्ष, हिंदी गति-प्रगति से जुड़े प्रासंगिक मुद्दे, हिंदी का विश्व संदर्भ, दावे और चुनौतियां, हिंदी क्यों-हिंदी क्यों नहीं, हिंदी में रोजगार के अवसर, डूबते उभरते हुए क्षेत्र व हिंदी का विकास और हमारी जिम्मेदारी' जैसे बिंदुओं पर श्रोताओं की जिज्ञासा को शांत किया। उसके बाद श्रोताओं ने अपने प्रश्न वक्ताओं से पूछें। खालसा कॉलेज के प्राध्यापक महेंद्र प्रताप सिंह और डॉ. दीपमाला ने भी वक्ताओं से सवाल-जवाब किए।

इस दो दिवसीय व्याख्यान एवं वेबिनार में डॉ. दीपमाला, डॉ. सविलता यादव, डॉ. भूपेंद्र कौर, डॉ. बलबीर कुंद्रा, डॉ. रेनू दुग्गल, डॉ. शैलजा, डॉ. हरदीप कौर, डॉ. अंजू बाला, महेंद्र प्रताप सिंह, डॉ. रुद्रेश नारायण मिश्र मौजूद रहें। साथ ही, डॉ हरनेक गिल व कॉलेज के हिंदी और हिंदी पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थियों के साथ-साथ कुछ पुराने विद्यार्थी भी राष्ट्रीय वेबिनार में मौजूद रहें। इस तरह से यह विभागीय ऑनलाइन प्रथम कार्यक्रम पूरी तरह से सफल रहा।